'ब्रह्म सत्यं जगत् स्फूर्तिः, जीवनं सत्यशोधनम्'

विनोबा-प्रवचन

(सप्ताह में तीन बार—मंगल, गुरु और शनि को प्रकाशित)

वर्ष ३, अंक ७७ | वाराणसी, मंगलवार, ३० जून, १९५९ | पचीस रुपया वार्षिक

शिक्षक तथा प्रोफेसरों की बैठक में

जम्मू (कश्मीर) ९-६-'५९

तालीम की तीन कसौटियाँ—निर्भयता, संयम और विचार-स्वातंत्र्य

देश में एक बाजू शिक्षक हैं और दूसरी बाजू है लश्कर, याने पुलिस। शिक्षक और लश्कर दोनों आज के समाज के लिए जरूरी माने जाते हैं। जिस हालत में हम हैं, दोनों की जरूरत जाहिर भी है। लेकिन ये दोनों एक-दूसरे के दुश्मन हैं। याने अगर शिक्षक अपना काम उत्तम करते हैं और देश भर में पर्याप्त संख्या में ऐसे शिक्षक उपलब्ध हैं, जो तालीम का काम करते हैं तो लश्कर की जरूरत नहीं रहनी चाहिए। इसलिए शिक्षकों को मैं शांति-सैनिक मान लिया करता हूँ।

शिक्षा की तीन कसौटियाँ

तालीम में अपने पर जब्त रखना एक बहुत बड़ी चीज है, जिसकी हर नागरिक और ग्रामीण को जरूरत है। जहाँ तालीम का अच्छा सिलसिला है, वहाँ नागरिकों में यह सिफत, गुण आना ही चाहिए। तालीम में दूसरी एक आवश्यक बात है, जिसे सब दुनिया मानेगी। वह यह है कि मनुष्य शिक्षित बनता है, तभी निर्भय बनता है। अगर तालीम से मनुष्य निर्भय नहीं बना तो यही कहना होगा कि गलत तालीम दी जा रही है। नागरिकों को निडर बनाना ही तालीम का उद्देश्य है। तीसरी बात है, विचार की आजादी और विचार करने की शक्ति, जो जिंदगी के लिए जरूरी है, वह तालीम से प्राप्त होनी चाहिए। अपने पर जब्त (संयम) रखना, निर्भयता और विचार की आजादी ये तीन तालीम की कसौटियाँ हैं। जिस किसी देश में ये तीन गुण प्रकट होते हैं, वही देश शिक्षित है। उस देश में लश्कर की जरूरत नहीं रहेगी।

परीक्षा : एकांगी कसौटी

अक्सर यह माना जाता है कि लड़कों को जिंदगी के लिए कुछ जरूरी जानकारी देना और उसे कितनी जानकारी हासिल हुई, इसकी एक बार परीक्षा लेना, यही तालीम की कसौटी है। मगर तालीम की यह कसौटी बिलकुल ही एकांगी है। उसमें बहुत हुआ तो तर्कशक्ति की, स्मरण-शक्ति की परीक्षा होती है। जिसे हम आत्मविकास कहते हैं, उसकी प्रगति लड़कों में कहाँ तक हुई है, इसका पता नहीं लग सकता है।

मेरी निगाह में इन दिनों तालीम पर जो खर्चा हो रहा है, वह लगभग बेकार है। अगर मुझसे पूछा जाय कि क्या आप आज की तालीम से यह पसन्द करेंगे कि लड़कों को कतई तालीम न मिले तो मैं 'हाँ' कहूँगा। आज जो तालीम दी जा रही है, वह न दी जाय और लड़कों को ऐसा ही छोड़ दिया जाय तो उससे देश का नुकसान नहीं होगा—ऐसा मैं मानता हूँ। बल्कि परमेश्वर ने तालीम की जो कुदरती योजना की है, वही चलनी चाहिए। बच्चों को माता-पिता के जरिये जो तालीम मिलती है, वह तो मिलेगी ही और कुदरत के साथ उसका सम्बन्ध आने से भी तालीम मिलेगी। इसलिए आज लड़कों को ऐसे ही छोड़ दिया जाय और तालीम पर जो खर्चा किया जा रहा है, वह न किया जाय तो मैं तो शुक्रिया अदा करूँगा।

मौजूदा तालीम से असन्तोष

मैं इस तालीम से बेहद असंतुष्ट हूँ। यह आज की बात नहीं है। जब मैं स्कूल-कॉलेज में पढ़ता था, तब भी असंतुष्ट ही था। बीच में ४०-५० साल गुजर गये, लेकिन जो तालीम उस वक्त चलती थी, करीब-करीब वही तालीम आज भी चल रही है। अगर उसमें और आज की तालीम में कुछ फर्क होगा तो यही होगा कि आज की तालीम कुछ कमजोर होगी, बच्चों का स्टैण्डर्ड गिरा हुआ होगा। जब मैं कॉलेज में पढ़ता था, तब मैं तालीम के बारे में इतना असंतुष्ट था कि मेरे जीवन का एक-एक क्षण व्यर्थ जा रहा है, ऐसा मैं अनुभव करता था। मैं दर्जे में पूरा हाजिर भी नहीं रहता था। वहाँ १०-५ मिनट बैठकर घूमने निकल जाता था। अगर उस वक्त मैं घूमता न होता तो आज भूदान-यज्ञ न चलता। अगर मैं उस रद्दी तालीम की सारी भाषणों में मौजूद रहता तो आज अपने में जो दिमागी आजादी पाता हूँ, वह न होती। आज पैरों में घूमने की जो ताकत मैं पाता हूँ, वह भी नहीं होती और पता नहीं मेरा क्या होता!—आखिर एक दिन मैं घर और कॉलेज छोड़कर निकला और मेरे पास जो सर्टिफिकेट थे, उन्हें जलाकर मैं बाहर निकला। मुझे अब तक उसका पश्चात्ताप नहीं हुआ है, क्योंकि मैंने देखा कि कॉलेज में जो क्रम चलता था, वह सारा का सारा अत्यन्त शुष्क और यांत्रिक था। असलियत के साथ उसका कोई ताल्लुक नहीं था।

संस्कृत में प्राणवान साहित्य

उस वक्त मेरी दूसरी भाषा फ्रेंच थी। उसका मुझ पर बड़ा उपकार हुआ, क्योंकि उन दिनों कॉलेज में संस्कृत में जो निकम्मा शृंगारिक साहित्य पढ़ाया जाता था, उस संस्कृत से मैं बच गया। फ्रेंच में हमें बहुत अच्छा साहित्य पढ़ाया गया। स्वामी विवेकानंद कहते थे कि अगर आप चाहते हैं कि दुनिया में आत्मज्ञान फैले तो संस्कृत सिखाओ। संस्कृत पर उनकी इतनी श्रद्धा थी। मैं भी अपने अनुभव से कहता हूँ कि संस्कृत में जो जादू है, आत्मा को बल देने की जो ताकत है, वह शायद ही दुनिया की दूसरी किसी भाषा में होगी। संस्कृत में वेद, उपनिषद् हैं, गीता है, ब्रह्मसूत्र, सांख्यसूत्र, योगसूत्र हैं, रामायण, भारत, भागवत, पुराण, अनेक भाष्य आदि असंख्य ग्रंथ पड़े हैं। उनमें आत्मा का विचार किया गया है। मनुष्य को निर्भय बनाने की शक्ति पड़ी है और विचार-स्वातंत्र्य की तो हद ही है। दुनिया में दूसरा ऐसा कौन सा समाज है, ऐसा कौन सा साहित्य है, जिसमें ईश्वर के अस्तित्व के विषय में संपूर्ण श्रद्धा से लेकर ईश्वर कतई नहीं है, ऐसा कहनेवाले लोग भी शामिल हैं? धार्मिक विचार की यह कोई पाबंदी नहीं है। संस्कृत में विचार की जो आजादी है, वह मैंने दुनिया की दूसरी किसी भाषा में नहीं देखी। मेरी मातृभाषा मराठी है, इसलिए उसे मैं बोल सकता हूँ, लेकिन उसकी खूबियों का उतना ज्ञान नहीं है, जितना कि संस्कृत का है। संस्कृत इतनी जानदार चीज है, लेकिन कॉलेज में संस्कृत का जो साहित्य पढ़ाया जाता है, वह सब गंदा साहित्य होता है। कहा जाता है कि उसमें साहित्यिक (Literary) श्रेष्ठता है। मेरी समझ में नहीं आता कि संस्कृत का प्राणवान साहित्य छोड़कर ये लोग उस दरबारी साहित्य के पीछे क्यों पड़ते हैं?

अंग्रेजी से भारी हानि

आज अंग्रेजी का जो आक्रमण होता है, उससे बहुत नुकसान हो रहा है। अंग्रेजी साहित्य बहुत संपन्न भाषा है। उसमें विज्ञान है, वह दुनिया भर में चलती है। अंग्रेजी में बहुत अच्छे लेखक और कवि हुए हैं। अध्ययन की दृष्टि से अंग्रेजी की योग्यता बहुत बड़ी है। मुझे संतोष और अभिमान मालूम होता है कि मानव-जाति के एक विभाग ने इतना विकास किया है। तो भी मुझे लगता है वह भाषा आज यहाँ पर जिस तरह लादी जा रही है, उससे बहुत नुकसान होगा। लड़के उसे कबूल नहीं करेंगे। कहा जाता है कि आज शिक्षा का स्तर गिर रहा है, इसलिए बच्चों को बचपन से ही अंग्रेजी पढ़ाई जानी चाहिए। दुनिया में ऐसा कोई दूसरा देश नहीं है, जहाँ इस तरह मातृभाषा छोड़कर दूसरी भाषा लादी जाती हो। कहा जाता है कि इंग्लैंड के लड़के भी २-३ भाषाएँ पढ़ते हैं। लेकिन समझना चाहिए कि वे फ्रेंच, जर्मन आदि भाषाएँ पढ़ते हैं। वे इन भाषाओं के इतने करीब हैं कि जैसे कोई गुजराती लड़का मराठी या हिन्दी पढ़े। यहाँ के लड़कों को अंग्रेजी के जरिये तालीम देने का परिणाम क्या होता है, यह देखना हो तो लन्दन के लड़कों को हिन्दी के जरिये तालीम देकर देखिये। तब पता चलेगा कि इससे उनकी बुद्धि पर कितना दबाव पड़ता है। उससे लड़के बिलकुल निर्बोध बनेंगे। हम चाहते हैं कि हमारे देश में चन्द लोग अच्छी अंग्रेजी सीखें, चन्द लोग अच्छी फ्रेंच, जर्मन, अरबी, चीनी, जापानी, रूसी आदि भाषाएँ भी सीखें। हमें यह भी मान्य है कि लोग कुछ ज्यादा तादाद में अंग्रेजी सीखेंगे। तिस पर भी आज जिस तरह अंग्रेजी लादी जा रही है, उसका नतीजा यही होगा कि लड़के उसे ग्रहण नहीं करेंगे।

मातृभाषा के माध्यम से शिक्षा

कहा जाता है कि अंग्रेजी का स्टैण्डर्ड गिर रहा है। लेकिन अगर आप चाहते हैं कि अंग्रेजी का स्टैण्डर्ड न गिरे तो उसके लिए एक ही इलाज है। आपने अंग्रेजों को Quit India (भारत छोड़ो) कहा था, उसके बदले अब उनसे Return To India (भारत लौटो) कहिये। आप लाख कोशिश करें तो भी आजाद हिंदुस्तान का दिमाग परकीय भाषा को कबूल नहीं करेगा। बच्चे उसे कबूल नहीं कर रहे हैं, इसीसे पता चलता है कि उनका दिमाग आजाद है। अगर वे अंग्रेजी में ज्यादा दिलचस्पी लेते तो मैं हिन्दुस्तान के भविष्य के बारे में मायूस हो जाता। कहा जाता है कि लड़के दूसरे विषयों में अच्छी दिलचस्पी दिखाते हैं, लेकिन उन्हें अंग्रेजी अच्छी नहीं आती। अगर उनपर अंग्रेजी न लादी जाय और मातृभाषा के जरिये उन्हें सब विषयों का ज्ञान दिया जाय तो बहुत ही कम समय में वे ज्ञान ग्रहण करेंगे। प्रयोग करने से यह बात जाहिर हो जायगी।

डेढ़ सौ वर्षों का अनुभव

हिन्दुस्तान में १५० साल तक अंग्रेजी चली। लेकिन क्या रवीन्द्रनाथ ठाकुर और श्री अरविन्द को छोड़कर और कोई हिन्दुस्तानी है, जिसका साहित्य दुनिया में चलता है? क्या इन १५० सालों में कोई अंग्रेज लेखक हुआ, जिसने यहाँ की किसी भाषा में ग्रन्थ लिखकर यहाँ के साहित्य की वृद्धि की? तो फिर भारतीयों पर यह जिम्मेवारी किसने डाली कि वे अंग्रेजी भाषा में साहित्य लिखकर मिल्टन और टेनिसन का मुकाबला करें? कुदरत ने तो उनपर यह जिम्मेवारी नहीं डाली है। हमने १५० साल तक इतना परिश्रम किया, अंग्रेजी की इतनी उपासना की, फिर भी उस भाषा के साहित्य को हमने बड़ी देन दी, ऐसा तो नहीं कहा जायगा। तो फिर आज के लड़कों पर अंग्रेजी क्यों लादी जाय?

अंग्रेजी के जरिये संस्कृत की शिक्षा

हम जब पढ़ते थे, तब हमें संस्कृत भी अंग्रेजी के जरिये ही पढ़ायी जाती थी। यह एक अजीब बात थी। ऐसी कौन-सी दूसरी भाषा है, जिसमें दस हजार साल के पुराने शब्द जैसे के तैसे आज भी इस्तेमाल किये जाते हैं? वेद का पहला ही मन्त्र लीजिये। 'अग्निमीळे पुरोहितम् यज्ञस्य देवमृत्विजम्, होतारं रत्नधातमम्।' इसमें से अग्नि, पुरोहित, यज्ञ, देव, रत्न आदि सारे शब्द आज की भाषाओं में जैसे के तैसे चलते हैं। अग्नि, वायु, पवन, पृथ्वी, चन्द्र, सूर्य, मन, बुद्धि, अहंकार आदि हजारों पुराने संस्कृत शब्द आज जैसे के तैसे चलते हैं। महाभारत, गीता पढ़ते हैं तो आश्चर्य होता है कि उनके सारे शब्द आज भी चलते हैं। आप ऐसी और कोई भाषा मुझे बताइये, जिसमें पुरानी परम्परा के इतने शब्द आज भी चलते हों। जो भाषा पुरानी होकर भी नयी है, ऐसी भाषा हिन्दुस्तान में ही है। ग्रीक, लैटिन जैसी पुरानी भाषाएँ आज नहीं चलतीं। संस्कृत मुर्दा भाषा नहीं है, जिन्दा है। आज की हमारी प्रचलित भाषाएँ जितनी जिन्दा हैं, उनसे संस्कृत कहीं ज्यादा जिन्दा है। आप आज किसी भी भारतीय भाषा के लिए परिभाषा बनाने बैठें तो संस्कृत के सिवाय चारा नहीं है। कुछ लोग कहते हैं कि संस्कृत से बनी हुई परिभाषा कठिन बनती है, लेकिन संस्कृत से कठिन परिभाषा भी बनायी जा सकती है और आसान भी। संस्कृति का तर्जुमा अंग्रेजी में करना मुश्किल होता है। फिर

भी बचपन में हमें अंग्रेजी के जरिये संस्कृत पढ़ायी जाती थी! जिस जमाने में अंग्रेजी पर उतना ज्यादा जोर दिया जाता था, उस जमाने में भी हमने अंग्रेजी में पहले दर्जे के ज्यादा लेखक नहीं पैदा किये तो फिर आज के लड़कों को अंग्रेजी सिखाने का आग्रह क्यों किया जाता है? इसलिए लड़कों को अंग्रेजी सीखने के बारे में आजादी होनी चाहिए। स्वतन्त्र भारत में लोग अच्छी अंग्रेजी जरूर सीखें, मामूली अंग्रेजी का आज कुछ भी उपयोग नहीं है, सिवाय इसके कि उसके कारण मातृ-भाषा का ज्ञान कम होगा।

शिक्षा में उद्योग का अनादर

आज की तालीम में एक बहुत बड़ी खामी यह है कि उद्योग की तालीम नहीं दी जाती है। इसलिए होता यह है कि तालीम भी बढ़ती है और बेकारी भी बढ़ती है। याने तालीम और बेकारी दोनों Synonyms (पर्यायवाची) हैं। आज की तालीम पाया हुआ लड़का 'न घर का न घाट का' रहता है। वह न घर का काम कर सकता है, न खेत का। आज की तालीम बड़ी सहूलियत के साथ दी जाती है। लड़कों को कोई तकलीफ न हो, इस बात का खयाल रखा जाता है। 'सुखार्थिनः कुतो विद्या, कुतो विद्यार्थिनः सुखम्।' तुम विद्या चाहते हो तो सुख कैसे मिलेगा? इस तरह सुख और विद्या का विरोध बताया गया है। लेकिन आज के विद्यार्थी सहूलियत का जीवन जीते हैं, हाथों से काम करना नहीं जानते हैं। उन्हें 'आरामदायक जीवन' की आदत पड़ जाती है तो फिर वे आगे किस प्रकार का जीवन जीयेंगे?

धर्म निरपेक्षता के नाम पर

इन दिनों Secuelar state (धर्मनिरपेक्ष राज्य) के नाम पर विद्यार्थियों को आध्यात्मिक साहित्य नहीं पढ़ाया जाता है। हमारी भाषाओं की अंग्रेजी से तुलना की जाय तो अंग्रेजी में जो विविध प्रकार का साहित्य है, वैसा साहित्य हमारी भाषाओं में नहीं है। लेकिन हमारी भाषाओं का सर्वोत्तम साहित्य आध्यात्मिक साहित्य है। अगर धर्मनिरपेक्ष राज्य के नाम पर वह कुल का कुल साहित्य निषिद्ध हो जाय तो विद्यार्थियों में अखलाकी चीज कैसे पैदा होगी? सिखों में करीब-करीब हर लड़का 'जपुजी' पढ़ता है। वह संस्कृत, अरबी जैसा कठिन नहीं है। लेकिन इन दिनों धर्मनिरपेक्ष राज्य के नाम पर 'जपुजी' की तालीम स्कूलों में नहीं दी जायेगी। 'जपुजी' में तो कहा है कि 'आयी पंथी सकल जमाती'। कुल दुनिया हमारी ही जमात है। सबके साथ समान भाव रखने को इससे बेहतर तालीम दूसरी क्या होगी? लेकिन इन दिनों स्कूलों में तुलसीदास की रामायण भी रामायण के तौर पर नहीं पढ़ायी जायेगी, केवल साहित्य के अंश के तौर पर उसका थोड़ा-सा अंश पढ़ाया जायेगा। लेकिन जिससे श्रद्धा बन सके, ऐसी कोई चीज नहीं पढ़ायी जाती है। रामायण, कुरान, गीता, जपुजी कुछ भी नहीं पढ़ाया जाता है। इस तरह आज की तालीम में आध्यात्मिक चीज नहीं है।

दोनों ओर से अन्याय

आज यह होता है कि कुछ लड़के २४ साल तक पढ़ते रहते हैं और करोड़ों लड़कों को तालीम बिलकुल नहीं मिलती है। आठ-दस साल की उम्र से ही उन्हें काम में लगा दिया जाता है। याने दोनों तरफ से अन्याय होता है। उससे दोनों का नुकसान होता है। बड़ों के लड़के २४ साल तक पढ़ते रहते हैं और उन्हें बच्चा ही माना जाता है। पानीपत में अहमदशाह अब्दाली जैसे कुशल जनरल का एक साल तक जनकोजी शिंदा ने मुकाबला किया। उस वक्त जनकोजी की उम्र १७ साल की थी और वे १८ हजार सेना के सेनापति थे। १७ साल की उम्र में जनकोजी अहमदशाह के खिलाफ अकेला लड़ता रहा। हमारे यहाँ माना जाता था कि 'प्राप्ते तु शोडषे वर्षे पुत्रं मित्रमिवाचरेत्।' लड़का १६ साल का हो गया तो उसके साथ मित्र सरीखा बर्ताव होना चाहिए। उसके बाद बेटे को अपने पैरों पर खड़ा होना चाहिए। बाप अपने बेटे को खिलाता है, मित्र को नहीं। याने सोलह साल के बाद लड़के को दिमाग में और काम करने में बिलकुल स्वतन्त्र होना चाहिए। फिर बाप मित्र के नाते उसे सिर्फ सलाह दे सकता है।

एक अध्यापक की शाला

आज देश के उत्तम से उत्तम छोटे लड़कों को, जो हमारे देश के रत्न, जवाहर, माणिक हैं, पढ़ाने के लिए कम ज्ञानवाले, कम चरित्रवाले शिक्षक रखे जाते हैं। हेड मास्टर ज्ञान में ऊँचा माना जाता है, वह ऊपर की जमात को पढ़ाता है। पहली जमात में तो शून्य में से पैदा करना होता है, इसलिए उस जमात को पढ़ाने का काम हेड मास्टर को सौंपना चाहिए। ऊपर की जमातों में इसके बीस या तीस बनाने की बात है, इसलिए वहाँ मामूली शिक्षक हो तो काम चल सकता है। आज-कल गाँवों में एक शिक्षक की शालावाली बात चलती है, वह भी मेरी समझ में नहीं आती। एक ही शिक्षक चार जमातों को पढ़ाता है। मुझे लगता है कि चार मुँहवाला ब्रह्मदेव है। क्या उसे मैं ढोंग मानता हूँ? इसके बजाय गाँवों में तालीम न दी जाय तो ठीक होगा। आज राज्य की तरफ से देहातों के लिए कुछ हो रहा है, यह दिखाने की कोशिश चलती है तो ठीक है, नहीं तो देहातवाले चिल्लायेंगे। ऐसी तालीम न चले तो देश का क्या नुकसान होगा?

तालीम की तीन शर्तें

निर्भयता, अपने पर जब्त रखना और विचार करने की शक्ति के साथ विचार की आजादी—ये तीन चीजें जिसमें हैं, उसका नाम है 'तालीम'। ऐसी तालीम जिस देश में चलेगी, उस देश में सेना की जरूरत ही नहीं रहेगी।

शिक्षक विनोबा का काम करें

मैं कश्मीर आया हूँ तो चाहता हूँ कि यहाँ का कुछ काम बने। मेरा काम कौन करेगा, इस पर सोचता हूँ तो मेरी नजर शिक्षकों पर पड़ती है। शिक्षकों को गाँव-गाँव जाना पड़ता है। जहाँ दूसरे नहीं जाते हैं, वहाँ भी उन्हें जाना पड़ता है। मैं आपसे कहता हूँ कि Make virtue out of necessity, आवश्यकता में से गुणविकास करिये। आप गाँव-गाँव जाकर अच्छे विचार पहुँचायेंगे तो ग्रामनेता बनेंगे। मैं आपको अपनी जमात मानता हूँ। मैं चाहता हूँ कि आप तनख्वाह तो सरकार से लें और काम बाबा का करें।

०००

भारत सेवक समाज के कार्यकर्ताओं के बीच — जम्मू (कश्मीर) ७-६-'५९

सर्वेण्ट आफ इण्डिया सोसाइटी और भारत सेवक समाज

आज मदद उसे खींचनेवाले ही पाते हैं

जिनके जीवन का स्तर बिलकुल ही गिरा है, जो परित्यक्त हैं, उनके पास मदद कहाँ पहुँचती है। योजना-आयोग के उद्योग-कम्युनिटी-प्रोजेक्ट-मंत्री स्वयं कहते हैं कि अभी तक हमारी तरफ से जो मदद मिली, वह उन्हींको मिली, जो उसे खींच सकते थे। याने गरीबों को मदद नहीं मिलती। इस तरह से काम चलता है तो दुःखियों का दुःख मिटाने का काम नहीं होता। आप देखते हैं कि भूदान-आन्दोलन में सीधी मदद गरीब बेजमीन को मिलती है। यहाँ सरकार ने २२ एकड़ का सीलींग बनाया है तो मुजारों को जमीन मिली है। कई दफा मुजारों की हालत मालिकों से भी अच्छी होती है। कानून बनने के पहले ही कइयों ने अपने भाईयों और लड़कों में जमीन बाँट ली और कानून बनने पर भी बेजमीन ऐसे ही रह गये। इस तरह आज जो भी काम चलता है, वह ऊपर के स्तर में ही रुक जाता है। ये लोग कहते हैं कि उत्पादन बढ़ेगा तो वह टपककर गरीबों तक कुछ पहुँचेगा ही। लेकिन नीचे चट्टान हो तो उसके नीचे टपकेगा भी नहीं। सवाल यही है कि क्या हम सीधे गरीबों के लिए कुछ मदद दे रहे हैं? मनुष्य का सारा शरीर ठीक है, लेकिन कान में दर्द है तथा बाकी सारे अवयव अच्छे हों तो भी मनुष्य बेचैन हो जाता है। उसका सारा ध्यान कान की ओर जाता है। इसी तरह अपने समाज का जो सबसे दुःखी अवयव है, उसे मदद पहुँचाने की कुछ योजना आप कीजिये। अगर आप कहीं रीडिंग रूम खोलेंगे तो उससे क्या लाभ होगा? जो सुखी होंगे, वे ही वहाँ आकर पढ़ेंगे, दुःखी नहीं आयेंगे। वहाँ भी कोई अच्छा साहित्य तो नहीं रखा जाता। अखबार रखे जाते हैं, जिनमें गंदगी ही भरी रहती है। पुराने जमाने में अखाड़ा खोलने पर तो वह देशभक्ति होती थी। लेकिन आज आपने अखाड़ा खोला तो उसमें कुश्ती खेलने के लिए वही आयेगा, जिसे खाना मिलता है। ये सारी सेवाएँ बिलकुल निकम्मी नहीं हैं। सेवा के नाते दुनिया में उनका भी कुछ उपयोग है। परन्तु आज जिन्हें मदद की जरूरत है, उन्हें मदद पहुँचानी होगी। उस दृष्टि से ऐसी सेवा का कोई उपयोग नहीं है।

जम्मू-कश्मीर की विशेष स्थिति

जम्मू और कश्मीर राज्य की हालत विशेष प्रकार की है। यहाँ की राजनीतिक परिस्थिति डाँवाडोल है। इसलिए यहाँ गरीबों को कुछ मदद मिले तो उन्हें इतमीनान हो जाता है और राज्य को भी स्थिरता प्राप्त होती है। अगर साक्षात् गरीबों के लिए कुछ न किया जाय, ऊपर-ऊपर ही से काम करें और राज्य को गरीबों का शाप ही मिले तो वहाँ का स्तर क्या रहेगा? अंग्रेज सात हजार मील से जहाजों में बैठकर यहाँ आये, जब कि आमदरफ्त के आज के जैसे साधन नहीं थे। उन्होंने यहाँ व्यापार चलाया, राज्य कमाया और १५० वर्षों तक राज्य चलाया और आखिर वे इसे छोड़कर चले गये। यहाँ उनके पैर इसीलिए जम सके कि यहाँ निचली जमातों की कोई पर्वाह नहीं की जाती थी। इसलिए अंग्रेजों को उन जमातों में से चाहे जितने नौकर मिले। मिशनरियों को भी उन्हीं जमातों में से धर्माचरण करनेवाले मिले। ऊँची जमातों के बहुत ही थोड़े लोग जान-बूझकर धर्मान्तरित हुए, अक्सर मुसलमान और ईसाइयों को निचली जमातों में से ही धर्मान्तरण करनेवाले मिले, क्योंकि ऊपर के लोग उनकी पर्वाह नहीं करते थे और आपस में लड़ते-झगड़ते रहते थे। बड़ों के झगड़े चलते और नीचे के लोग पीसे जाते थे। अंग्रेज यहाँ आये, तब देश की यही हालत थी। इसीलिए हमने आजादी खो दी।

गरीब सुखी न हो तो लोकतंत्र न टिकेगा

आज भी वही हालत है। इसलिए हमें समझना चाहिए कि आज देशों की आजादी तभी टिक सकती है, जब निचला वर्ग सुखी रहेगा। अगर वह सुखी नहीं होगा तो आज 'लोकतंत्र' देखते-देखते लश्करशाही में परिणत हो जायगा। अभी खबर आयी है कि हिन्दएशिया में 'गाइडेड डेमोक्रेसी' की बात नहीं चली, इसलिए लश्कर की सत्ता आयी। पाकिस्तान, मिस्र, फ्रान्स आदि सभी देशों में जो कुछ हुआ, वह हम देख चुके हैं। इस तरह स्पष्ट है कि लोकशाही का रूपान्तर लश्करशाही में होता है। देर नहीं लगती, क्योंकि राज्य का सारा दारमदार लश्कर पर ही होता है। अगर गरीब असन्तुष्ट रहे तो चाहे हम जम्हूरियत (लोकशाही) की बातें करते रहें तो भी लोकशाही के मूल्य नहीं टिकेंगे। इसलिए आप सीधे गरीबों को मदद देने का काम कीजिए।

'समाज'वाले मेरा साथ दें

यहाँ भूदान में लोग जमीन दे रहे हैं और उसे बाँटने का इन्तजाम भी हो चुका है। इस काम में सीधे गरीबों को मदद मिलती है, इसलिए मैं इसमें आपका योग चाहता हूँ। यहाँ शरणार्थियों की समस्या है। उनकी सेवा भी आप कीजिये। सर्वेण्ट आफ इण्डिया सोसाइटी के लोग जहाँ कहीं दुःख हो, वहाँ पहुँच जाते थे। आप भी वैसा ही कीजिये। आप मुझे सहयोग देंगे तो मेरी शक्ति का आपको और आपकी शक्ति का मुझे उपयोग होगा। इस तरह दोनों के मिल-जुलकर काम करने से इस राज्य का कुछ काम बनेगा। ♦♦♦

[इसका पूर्वांश गतांक में प्रकाशित है]

अनुक्रम

१. तालीम की तीन कसौटियाँ : .... जम्मू ९ जून '५९ पृष्ठ ५२५

२. सर्वेण्ट आफ इण्डिया सोसाइटी.... जम्मू ६ जून '५९ " ५२८

♦♦♦

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व-सेवा-संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में सम्पादित, मुद्रित और प्रकाशित।
पता : गोलघर, वाराणसी (उ० प्र०) फोन : १३९१ तार : 'सर्व-सेवा' वाराणसी